ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-251-253,YEAR- DEC.2016

वर्तमान शिक्षा में वैदिक ज्ञान का महत्व

❑ डॉ0 पारुल मिश्रा

वर्तमान परिस्थितियों में हमारी भावी पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति से बुरी तरह प्रभावित है। हमारे बच्चे भारतीय परंपराओं, संस्.ति एवं ज्ञान की विशालता तथा गहराई से अनभिज्ञ हो गये हैं। ऐसे में आवश्यकता है कि हम उन्हें अपनी वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिकता, प्राचीनता एवं गहराई से रूबरू करवायें। उन्हें सोचने को मजबूर करें कि हम आज जो विश्व में नए अविष्कार देख कर आकर्षित हो रहे हैं, उनमें से बहुत से हमारे वैदिक साहित्य में पहले से ही उल्लेखित हैं। इसके लिए हमें हमारी शिक्षा व्यवस्था में वैदिक ज्ञान को सम्मिलित करना होगा।

वर्तमान में ज्ञान के प्रसार एवं प्रसार के लिए उनके विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्थापित किए गए हैं जिनका उद्देष्य है कि प्रत्येक मनुष्य के चरित्र का निर्माण एवं उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास इस प्रकार से किया जाए कि वह न सिर्फ अपना विकास कर सकें, अपितु अपने परिवार, समाज, राष्ट्र तथा पूरे विश्व के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित कर सकें। हम मानते हैं कि एक शिक्षित व्यक्ति न सिर्फ अपना एवं अपने समाज का कल्याण करता है बल्कि सम्पूर्ण विश्व में सुख एवं शांति का प्रसार करता है। परंतु वर्तमान समय में समाज से शांति मानो नष्ट हो चुकी है तथा लोगों का आपसी प्रेम एवं सद्भाव धीरे–धीरे समाप्त होता जा रहा है। इसका एक प्रमुख कारण यही है कि हम शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य विद्यार्थी को जीवकोपार्जन योग्य बनाना मानने लगे, परिणाम स्वरूप भावी पीढ़ी नैतिक शिक्षा और संस्कारों के बिना स्वार्थ केंद्रित पैसा कमाने की मशीन बन कर रह गई, जिससे भारत जैसे पारम्परिक राष्ट्र में कई सामाजिक बुराइयां सामने आने लगी। हम प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली के आदर्श एवं ग्रहणीय तत्वों को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में समावेशित करके इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

क्या है वैदिक शिक्षा? क्या मात्र सिर मुड़वाना, भिक्षा मांगना व श्लोकों का रप्त स्मरण? नहीं, यह है हमारी विशाल धरोहर। प्राचीन वैदिक शिक्षा की बहुत सी ऐसी विशेषतायें हैं जो आज भी शैक्षिक .ष्टि से अत्यंत उपादेय सिद्ध हो सकती हैं। जैसे उच्च विचार, सवानुशासन, स्नेह एवं श्रद्धा पर आधारित अध्यापक–छात्र संबंध, शहर के कोलाहल से दूर शांत व प्राकृतिक परिसर, छोटी कक्षाएं, अच्छी आदतों का निर्माण, सादा संयमित तथा दुर्व्यसनों से रहित जीवन आदि। भारतीय संस्कृति के ज्ञान एवं महत्व को भावी पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए डॉ0 लक्ष्मण स्वामी मुदालियर ने भी लिखा था कि–

"हमारे युवा भारतीयों को उस विरासत को पहचानने दो, जो उनकी अपनी है। ईश्वर करे कि युवा पीढ़ी भारत की वास्तविक आत्मा को पहचाने तथा अपने सभी कार्यों में उसका अनुसरण कर सके।" हम जिस वैदिक साहित्य की बात कर रहे हैं वह हमारे भारतीय साहित्य का ही नहीं अपितु विश्व के सभी उपलब्ध साहित्य का प्राचीनतम साहित्य है, इसी कारण वेदों को सिर्फ भारतीय विद्वान ही नहीं अपितु विश्व के अन्य विद्वान भी सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।

आचार्य सायण ने वेदों को भगवान का श्वास कहां है– "यस्य निश्वासितं वेदाः।"

हम आज भारत की प्राचीनतम शिक्षा पद्धति को पूर्णता उसी स्वरूप में तो ग्रहण नहीं कर सकते पर यदि शिक्षाविद एक रूपरेखा तैयार करें तो वेदों के गुणों एवं विशेषताओं को किसी न किसी रूप में वर्तमान शिक्षापद्धति में सम्मिलित करना लाभप्रद ही

❑ एसोसिट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, एन0ए0के0पी0पी0जी0 कॉलेज फर्रुखाबाद (उ0प्र0), भारत

होगा। इनको शिक्षा का अंग बनाने से छात्रों के व्यक्तित्व व चरित्र के विकास व निर्माण में निश्चय ही लाभ मिलेगी।

वैदिक शिक्षा में वर्तमान शिक्षा समस्या के समाधान–

1. प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का प्रारंभ ही ग्रहणीय है वहां शिक्षालयों में सभी प्रकार के प्रबंध निःशुल्क थे तथा शिक्षा प्राप्त करने में भी धनाभाव कोई विशेष बाधा नहीं थी। जिस कारण इन संस्थाओं में वास्तविक योग्यताओं का विकास होता था। यह सच है कि सरकार ने शिक्षा को जन जागरण तक पहुंचाने के लिए कई योजनाएं चलाई हैं फिर भी हमें स्वीकारना होगा कि आज शिक्षा के क्षेत्र में धन की भूमिका बढ़ गई है तथा डिग्रियां पैसों के दम पर खरीदी जा रही हैं जिस कारण धनाभाव में कई प्रतिभाएं एवं योग्यताएं सामने नहीं आ पा रही हैं।

2. वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की एक और समस्या जो उभरकर सामने आ रही है वह यह है कि छात्र आज सीखी गई विषयवस्तु को कल तक भूल जाते हैं इसका कारण है मॉडल पेपर संस्ति। आज छात्र शिक्षक से यह नहीं पूछते कि कौन सी पुस्तक अच्छी है? अपितु उनकी रूचि यह जानने में ज्यादा होती है कि कौन सी मॉडल पेपर अच्छा है या किसमें से ज्यादा प्रश्न आते हैं? इस मॉडल पेपर आधारित अध्ययन पद्धति के कारण ज्ञान सतही हो गया है। इसका कारण निश्चित ही दोषपूर्ण शिक्षण पद्धतियां हैं। वैदिक शिक्षा में श्रवण, मनन, चिंतन स्वाध्याय एवं पुनरावृति आदि शिक्षण विधियां थी जिसमें छात्र न केवल ज्ञान का अर्जन करते थे अपितु एकांत में उस पर मनन एवं चिंतन भी करते थे, जिसके परिणाम स्वरूप मौखिक रूप से प्राप्त ज्ञान स्थाई रहता था। वैदिक शिक्षा की श्रवण, मनन, चिंतन, स्वाध्याय तथा पुनरावृति विधियों का वर्तमान शिक्षा में ग्रहण करना हमारे छात्रों के बौद्धिक स्तर को उच्च स्तर पर ले जाएगा।

3. सैद्धांतिक ज्ञान व व्यवहारिक ज्ञान में दूरी की कमी जो की शिक्षा व्यवस्था की तथा छात्र की असफलता का कारण बनती है में भी प्राचीन वैदिक शिक्षा में हमें मार्गदर्षित करती है। तक्षशिक्षा में जीवक की परीक्षा आचार्य ने विशेष विधि से ली इसके लिए आचार्य ने जीवक से कहा–

"तुम 5 कोस की परिधि में घूमकर उन वनस्पतियों को लाओ जिनका चिकित्सा में उपयोग न हो सकता हो।"

जीवक घूम–फिर कर लौट कर कहा–"मुझे कोई ऐसी वनस्पति नहीं मिली जो चिकित्सोययागी न हो।"

आचार्य ने जीवक को उत्तीण घोषित करके चिकित्सा कार्य करने का अधिकार प्रदान किया।

उपर्युक्त उदाहरण से हम तत्कालीन शिक्षा में व्यवहारिक ज्ञान की शैली का अंदाजा लगा सकते हैं। यही परीक्षा यदि आज एम0एस0सी0 वनस्पति विज्ञान या आयुर्वेदिक चिकित्सा के छात्रों की ली जाए तो विश्वास के साथ आ जा सकता है कि छात्र पौधों का एक पूरा गठ्ठर ले आएंगे जिनमें बहुत से ऐसे पौधे भी होंगे जिनके बारे में वे पुस्तकों में भी पढ़ चुके होंगे परंतु वास्तविक रूप से अनभिज्ञ होने के कारण वे उन्हें पहचानने में असमर्थ रहते हैं। अतः आज आवश्यकता है कि सैद्धांतिक ज्ञान के साथ विद्यार्थियों को वांछित व्यवहारिक ज्ञान भी दिया जाए व इसके लिए पूर्वनियोजित योजना तैयार की जाए जिससे अपने–अपने क्षेत्र में वह अधिक सफलता पा सकें।

4. हमें बड़े जोर शोर से सर्वांगीण विकास की बात करते हैं परंतु सही मायनों में वर्तमान शिक्षा एक या दो पहलुओं को विकसित कर पाती है। वास्तव में इसका व्यावहारिक रूप वेदों में मिलता है–

अर्थवेद में लिखा है– तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे विभर्ति।

यहां आचार्य शिष्य को उपने उदर में तीन रात्रियों तक धारण करने की बात करते हैं ये रात्रियाँ तीन प्रकार के अज्ञान है–

प्रथम – अपने जीवन लक्ष्य से अनभिज्ञता।

द्वितीय – सृष्टि के पदार्थों से अनभिज्ञता।

तृतीय – आत्मा, परमात्मा व सृष्टि के पारस्परिक संबंध से अनभिज्ञता।

तीनों अभियानों को दूर करने के उन्होंने साधन बताएं पहली अज्ञानता ज्ञान प्राप्त करके दूर होती है तो दूसरी अज्ञानता विज्ञान में पंडित्य प्राप्त करके व तीसरे प्रकार की अज्ञानता अध्यात्म की शिक्षा देकर दूर की जा सकती है।

इस प्रकार वैदिक संस्.ति में यदि धर्म का प्रधानस्थान प्राप्त था तो विज्ञान भी कम महत्वपूर्ण नहीं था। प्राचीन भारत के विभिन्न विज्ञानों यथा–चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान, गति विज्ञान, वास्तुविद्या, यंत्र विज्ञान, मनोविज्ञान ज्योतिष तथा गणित का विकास सर्वोपरि था।

उदाहरण स्वरूप आज हम लंबे अनुसंधानो के बाद बिना ऋतु में पुष्प फल विकसित कर पाए हैं। अथक अनुसंधानों के बाद फलों को अधिक संख्या में और बड़े आकारों में प्राप्त किया जा सकता है इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक कालीन वनस्पति शास्त्री इस ज्ञान से बहुत पहले से परिचित थे।

इसी प्रकार 'सिद्धांत शिरोमणि' में स्वचालित यंत्रों का भी उल्लेख मिलता है। ऋषि भारद्वाज ने "यंत्रसर्वस्व" ग्रंथ के वैमानिक प्रकरण में तीन प्रकार के विमानों का वर्णन किया है। इतना ही नहीं इन विमानों पर विशेष लेप के द्वारा उन्हें अदृश्य करने की तकनीक भी उन्हें आती थी साथ ही वे इन विमानों को शस्त्र सज्जित भी कर सकते थे।

किसी के मन को जान लेना वैदिक काल में कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। शतपथ ब्राह्मण में मिलता है कि देवगढ़ मनुष्य के मन को जानते थे। यहां अथर्ववेद की एक श्रुति का उल्लेख उचित होगा।

मनसा संकल्पयति तद् वातमभिगच्छति।
वातो देवम्य आचष्टे यथा पुरूष तेमनः।।

शतपथ ऋतु में यह निम्न प्रकार अनुवादित है यहां देव शब्द विद्वान मनुष्य के लिए प्रयोग करते हुए स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य के मन में उठे विचार प्राण के द्वारा मनुष्य के चारों और वर्तमानवायुमंडल में पहुंचते है वायुमण्डल से विद्वान उस प्रक्रिया के तत्व को जानने वाले पुरुष के विचारों को जान लेते है। योगशास्त्र में इसे सरलता से सीखा जा सकता है। वर्तमान में इस कला को ही मनोविज्ञान कहा जाता है। पर हम आज भी इतनी गहराई तक नहीं पहुंच सकते हैं जहां तक हमारे प्राचीन विद्वान पहुंच गए थे।

आज विद्वान यह आरोप लगाते हैं कि वर्तमान काल में विज्ञान के क्षेत्र में हुए नवीन अविष्कारों से आकर्षित होकर ही भारतीय हिंदू वेदों में विज्ञान के अस्तित्व की सिर्फ कल्पना ही कर कर रहे हैं परंतु यह आरोप बिल्कुल भी स्पष्ट भी स्वीकारणीय नहीं है क्योंकि वेदों में अभी भी बहुत से ऐसे तत्व हैं जो हमारी कल्पना से परे हैं।

यदि हमारी शिक्षा संस्थाओं में आधुनिक विज्ञान के अध्ययन के साथ ही प्राचीन विज्ञान व कलाओं के अध्ययन की व्यवस्था हो तो निश्चित रूप से लोक कल्याण होगा। जिस प्रकार आज पर्यावरण शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, मानवाधिकार शिक्षा को अनिवार्य माना जा रहा है सामाजिक विज्ञान के साथ–साथ इंजीनियरिंग, चिकित्सा विज्ञान इत्यादि के पाठ्यक्रमों में भी वेदों के इस क्षेत्र से संबंधित ज्ञान को सम्मिलित किया जाए तो जहां छात्रों को नए अनुसंधान करने की प्रेरणा मिलेगी, वहीं अपनी संस्.ति विरासत पर वह स्वयं को गौरवान्वित भी अनुभव करेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुखर्जी एस.एन (1955) "हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन इंडिया" नन्दा किशोर ब्रदर्स, बनारस।
2. घोष सुरेश चंद्र (2001) "द हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन एनशियेंट इण्डिया, मुनीशराम मनोहरलाल पब्लिकेशन न्यू देल्ही।
3. मित्र भास्कर (2001) 'वैदिक षिक्षा पद्वति' महार्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन।
4. हरदास बाल शास्त्री ("वेदों में शिक्षा पद्वति") सुरूधि प्रकाशन, दिल्ली।